जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५३ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०२२ ❖ वीर संवत २५४८ ❖ विक्रम संवत २०७८

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● कौटुंबिक मुल्यों के संवर्धक भगवान महावीर	२३	● श्री महावीर स्वामी का जीवन परिचय	४९
● जैन जागृति - न्युज बुलेटिन	२४	● सेवाव्रती नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले	५१
● क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, पुणे	२६	● भगवान महावीरांची मानवतावादी शिकवण	६७
● जीतो कनेक्ट २०२२, पुणे	२७	● चरित्र में चरण बढाना हो तो व्रत - नियम लिजीए	७१
● भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव, पुणे	२८	● णमो अरिहंताणं - णमो सिध्दाणं	७७
● अरिहंत जागृती मंच, पुणे - निबंध स्पर्धा	२८	● अंतिम महागाथा : ३६ - चलते फिरते सबके भगवान	९१
● श्री. प्रकाशजी धारिवाल - समाज भूषण	२९	● कडवे प्रवचन	९७
● गच्छाधिपती जैनाचार्य श्री दौलतसागर सूरिश्वरजी म.सा. ''संघ स्थविर'' पद	३०	● मोक्ष मार्ग के २१ कदम	९९
● जैन सोशल ग्रुप पुणे सेंट्रल - चित्रकला स्पर्धा	३१	● परिवार की समरसता	१०३
● कव्हर तपशील	३२	● समता व अहिंसेचा पुरस्कार	१०४
● पद्मश्री आचार्य चन्दनाजी आनंद रत्न के मोती प्रदिप बन जाते है	४३	● जियो और जीने दो	१०५
● त्रिशला नन्दन वीर की	४८	● भगवान महावीर दिव्यप्रकाश का महास्तंभ	१०८
		● हास्य जागृति	१०९
		● रंगबिरंगी : ४ - रंग दोस्ती के	१११
		● सरलमूर्ति प.पू. विरलदर्शनाजी म.सा.	११७

- स्काय ब्रीज आरोग्य शिबीर – अहमदनगर ११८
- आय–माय–मी–माय सेल्फ – इगो ११९
- 'समपर्ण' नशा मुक्ती केंद्र, पुणे १२३
- नाराज होना छोडो १२५
- कॅटची राष्ट्रीय परिषद – दिल्ली १२६
- Whatzo – व्हॉटझो स्टार्ट अप १२७
- मनोबल १२७
- भगवान महावीर सेवाधाम ट्रस्ट, कोल्हापूर १२८
- श्री. रसिकलालजी धारिवाल – जन्मदिन १२९
- डायग्नोपिन – अंधेरी, मुंबई ब्रँच उद्घाटन १२९
- श्री कनकप्रभाजी म.सा – महाप्रयाण १३१
- सुर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार – २०२२ १३२
- श्री. श्री. रविशंकर – सुर्यदत्त पुरस्कार १३३
- सुक्ती से मुक्ती – अहिंसा १३४
- सहिष्णुता का प्रशिक्षण जरुरी १४०
- दयालु हाथी १४२
- ऐसी हुई जब गुरु कृपा – खेदज्ञ बण १४४
- राणकपूर तीर्थ १४७
- ज्ञान विज्ञान की जननी जिज्ञासा १५०
- चिंतन का अमृत कुंभ १५२
- आनंदऋषिजी हॉस्पिटल – अहमदनगर १५५
- आनंदऋषिजी म.सा. जैन भवन, पुणे १५६
- स्व. माणिकचंदजी दुगड हॉस्पिटल, पुणे १५७
- हार्नेक्स सिस्टिम् प्रा.लि., पिथमपूर १५९
- आचार्य चन्दनाजी – गौरव समारोह १६५
- कषायों से सुक्षम संज्ञायें १६६
- सिध्दी चाहिए या प्रसिध्दी १६७
- भारत सरकार जनगणना धर्म के कॉलम में सिर्फ जैन लिखे १६९
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/ RTGS / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**

Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

कौटुंबिक मूल्यों के संवर्धक भगवान महावीर

लेखक : डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (निदेशक : अंतराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

वर्धमान महावीर के जीवन की पहली विशेषता उनकी अद्‌भुत मातृभक्ति है। मातृभक्ति में पितृभक्ति और पारिवारिक निष्ठा भी समाविष्ट हो जाती है। वर्धमान जब माँ के गर्भ में थे, तब अवधि ज्ञान ''अतीन्द्रिय ज्ञान'' से उन्होंने जाना कि गर्भ में उनके स्वाभाविक हलन चलन से माँ को कष्ट होता है। माँ को तनिक भी कष्ट न हो, इसलिए उन्होंने स्वाभाविक हलन चलन भी बन्द कर दी। इससे माता त्रिशला बड़ी चिन्तित हो गईं। यहाँ तक मूर्छित भी हो गई। गर्भस्थ शिशु ने माँ को चिन्तित व्यथित जानकर पुन: स्वाभाविक हलन चलन शुरू कर दी तथा यह संकल्प किया कि माता-पिता के जीवित रहते वे दीक्षा नहीं लेंगे। वर्धमान महावीर ने अपनी प्रतिज्ञा और माता-पिता के प्रति अथाह सम्मान का पूर्णत: पालन किया। माता-पिता के प्रति अपनी भक्ति के लिए उन्होंने अपनी प्रव्रज्या के महान संकल्प को भी स्थगित किया।

माता-पिता के प्रति सम्मान का आशय है- कौटुम्बिक प्रेम। कौटुम्बिक प्रेम का आशय है - स्नेह, सहयोग, सहिष्णुता, आज्ञाकारिता, त्याग, कर्त्तव्य परायणता आदि कौटुम्बिक मूल्यों को जीना। इस प्रकार के कौटुम्बिक मूल्य और सद्‌गुण ही व्यक्ति को शिष्ट, विशिष्ट और आत्मानुशासित बनाते हैं। समाज, व्यवसाय तथा धर्म-कर्म के विविध क्षेत्रों में व्यक्ति के कौटुम्बिक मूल्यों और संस्कारों का प्रभाव भी होता है। व्यक्ति को अपनी जीवन-साधना और सत्पुरुषार्थ से माता-पिता और परिवार से प्राप्त अच्छाइयों को विकसित और अभिवर्द्धित करना चाहिये ।

तीर्थंकर जन्म से तीन ज्ञान के धारी होते हैं। वर्धमान का तीर्थंकर बनना निश्चित था। माता त्रिशला के सपनों के सुफल बताने वाले स्वप्नशास्त्रियों ने भी इस आशय की घोषणा कर दी थी। वर्धमान अपने शैशवकाल से ही विरल अतिशयों, विशिष्ट अर्हताओं और अतुल पराक्रम के धनी थे। उनकी वीरता और - विरक्ति देखकर बड़े-बड़े अचंभित हो जाते थे। लेकिन वे बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेलते थे। वे अपनी बाल मित्र मण्डली में दिल खोलकर खुशियाँ लुटाते थे। वे अपने परिवार में माता-पिता का ख्याल रखते और बड़ों को सम्मान देते थे। वे सर्वत्र सबके चहेते बने हुए थे । तरुणावस्था आते-आते उनके विवाह की चर्चाएँ होने लगी। लेकिन माता-पिता उनकी चिन्तनशीलता, एकान्तप्रियता और संयममय दिनचर्या से हैरान रहने लगे। वर्धमान जल में कमल की तरह निर्लिप्त थे। वे विवाह के लिए सर्वथा अनिच्छुक थे। लेकिन यहाँ भी उन्होंने माता-पिता की भावना को सम्मान देते हुए विवाह करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। वर्धमान ने विवाह करके उस परिवार संस्था को गौरव-मण्डित और उत्कर्षित किया, जिसकी स्थापना प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने की।

वर्धमान के माता-पिता भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्राविका थे। श्रावक धर्म की बहुआयामी आराधना करते हुए उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि जीवन की अन्तिम घड़ियाँ बहुत ही निकट हैं। अतिशय ज्ञानी वर्धमान भी माता-पिता की आयु स्थिति को समझ रहे थे। वे माता-पिता के मनोभाव भी गहराई से महसूस करते थे। माता-पिता भी अपना हर मनोभाव वर्धमान से साझा करते थे। उन्होंने अपने महान सुपुत्र के समक्ष अन्तिम आराधना संलेखना की भावना व्यक्त की। मृत्यु जैसे कठोर सत्य को

समझते हुए भी उसे स्वीकार करने में हृदय उद्वेलित हो उठता है। लेकिन वर्धमान ने असीम धैर्य का परिचय दिया। वे अपने माता-पिता की समाधिमय अन्तिम आराधना में परम सहयोगी बने। ऐसा करके उन्होंने माता-पिता की सेवा-भक्तिको सर्वोच्च आध्यात्मिक ऊँचाई और उत्कर्ष प्रदान किया। वर्तमान ने सबको माता पिता की सेवा भक्ति करने, उनके प्रति अपना फर्ज निभाने तथा माता-पिता के कर्ज से हुए मुक्त होने की साधनामय राह भी दिखाई।

माता पिता के देवलोकगमन के पश्चात् सम्पूर्ण परिवार और राज्य में शोक का वातावरण छाया हुआ था, लेकिन वर्धमान स्थितप्रज्ञ बने हुए थे। कुछ दिन व्यतीत होने के उपरान्त जीवन-मरण के रहस्यों को जानने वाले वर्धमान अपने अभिनिष्क्रमण के बारे में विचार करने लगे। वे अपने बड़े भाई नन्दीवर्धन और चाचा सुपार्श्व के समक्ष अपनी भावना व्यक्त करने तथा उनसे आज्ञा लेने के लिए उनके पास गये। उन्होंने कहा- मेरी प्रव्रज्या से माता-पिता का हृदय दुःखी न हो, केवल इसीलिए मैं अब तक रुका रहा। माता-पिता की खुशी के लिए ही मैंने विवाह का बंधन स्वीकार किया। अब, मुझे दीक्षा की आज्ञा दीजिये!

पहले ही शोकाकुल भाई और चाचा (वर्धमान के दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने के अनुरोध पर भाव-विह्वल हो उठे। भ्रातृत्व से लबालब भरे नन्दीवर्धन तो रो पड़े। फिर वे अपने आपको संभालकर वर्धमान से आग्रह करते हैं- ''तुम अट्ठाईस वर्ष तक माता-पिता की खुशी के लिए रुके रहे। तो क्या बड़े भाई की खुशी के लिए कुछ समय और नहीं रुक सकते....?

इस कथन पर मातृ-पितृ-भक्त कुमार वर्धमान का भ्रातृत्व भी जाग उठा। उन्होंने कहा- 'आपकी आज्ञा और इच्छा का सम्मान करना मेरा कर्तव्य है। मैं आपके असीम स्नेह और वात्सल्य का आदर करता हूँ। लेकिन आप बताएँ कि कब तक मुझे रुकना पड़ेगा?

ज्येष्ठ भ्राता नन्दीवर्धन ने कहा-''दो वर्ष तक।

वर्धमान ने कहा भ्रातृवर! आपकी आज्ञा के अनुसार मैं मेरी प्रव्रज्या को दो वर्ष के लिए स्थगित कर दूँगा, लेकिन मेरी भी कुछ इच्छा है।

नन्दीवर्धन ने इच्छा के लिए पूछा तो वर्धमान ने कहा कि वे इन दो वर्षों की अवधि में घर में रहते हुए भी अनगार की तरह रहना चाहेंगे, त्याग-तपमय जीवन जीएँगे। महान भाग्यवान भाई नन्दीवर्धन और चाचा सुपार्श्व ने वर्धमान की अनुत्तर भावना का पूरा सम्मान किया और उनकी भावना के अनुरूप प्रबंध भी किया।

बड़े भाई, छोटे भाई और चाचा के इस सारे संवाद में कहीं भी, आसपास और दूर-दूर तक धन-सम्पत्ति, सत्ता और अधिकार की कोई चर्चा नहीं है। है तो केवल एक-दूसरे की श्रेष्ठ भावनाओं का सम्मान, प्रेम और त्याग पारिवारिक मूल्यों के उत्तम आदर्शों का सम्मान करने वाले ही अध्यात्म मार्ग के सच्चे आराधक बन सकते हैं।

वर्धमान ने अपने परिवार, पारिवारिक संरचना और सामाजिक परिवेश को समझकर हर कदम उठाया। माता-पिता की दिवंगति के बाद उन्होंने अपने अग्रज और चाचा के अलावा अपनी पत्नी यशोदा, बहिन सुदर्शना, बेटी प्रियदर्शना आदि सभी परिजनों को अपने अभिनिष्क्रमण के लिए राजी किया। वे दीक्षा के जन्मगत सत्संकल्प में भी पग-पग पर परिवार और पारिवारिक मूल्यों का सम्मान करते हैं। उनके वैराग्य और अभिनिष्क्रमण में कहीं भी लेशमात्र पलायनवाद, शिकायत या अवज्ञा नहीं हैं।

वर्धमान जब तीर्थंकर महावीर बन जाते हैं और उनकी देशना सुनकर कोई उनके पावन चरणों में दीक्षित होना चाहता है तो भगवान महावीर कहते हैं कि अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर आओ। जैन संघों में आज भी यह व्यवस्था कायम है। यह व्यवस्था कर्तव्यपरायणता, माता-पिता और परिवारजनों का

सम्मान और परिवार-संस्था की महत्ता के साथ जुड़ी है।

स्थानांग सूत्र में भगवान महावीर ने दस धर्मों में 'कुल-धर्म' 'कुटुम्ब-धर्म' को भी स्थान दिया, जो पारिवारिक कर्त्तव्यों के निर्वहन और पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण पर बल देता है। उन्होंने सद्‌गृहस्थ के लिए अणुव्रतों की आदर्श जीवनशैली प्रदान की, जिसमें पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति निष्ठा के सत्संकल्प भी समाविष्ट हैं।

स्नेहिल - सुदृढ़ परिवार - संस्था एक ओर श्रेष्ठ व्यक्तित्व और अनुशासित नागरिक के निर्माण में सहायक होती है, दूसरी और इससे समाज की शक्ति बढ़ती है और सामाजिक-मानवीय मूल्य पृष्ट होते हैं। ऐसे अनुकूल वातावरण में ही धर्म और अध्यात्म के उपवन फलते-फूलते और खिलते-महकते हैं। भगवान महावीर ने 'सांसारिक परिवार' और 'धर्म-परिवार' के बीच जो अनेकान्तमय रिश्ता कायम किया है, वह बड़ा ही विलक्षण है। उसे समझने और अपनाने की आवश्यकता है। ●

जैन जागृति ''न्यूज बुलेटीन'' प्रकाशन

जैन जागृति

श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, लोणीकंद, पुणे

पूज्य श्री. महासती म. सा. व वाणीभूषण पूज्य श्री. प्रीतिसुधाजी म.सा. ६० वॉं दीक्षा दिन

सौ. आशाबाई रमणलालजी लुंकड उज्ज्वल गोशाला - नामकरण

जैन जागृति

जैन जागृति

१०१ वर्षीय गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री दौलतसागर सुरीश्वरजी महाराजा को ''संघ स्थविर'' पद अर्पण

जैन जागृति

आचार्य श्री चन्दनाजी 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित

श्री जैन सकल संघ, पुणे - गौरव समारोह

जैन जागृति मासिक गत ५३ वर्षे दरमहा प्रकाशित करण्यात येत आहे. मासिक प्रकाशना सोबत मार्च २०२२ पासून समाजात होणाऱ्या धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमाचे ऑनलाईन न्यूज बुलेटीन प्रकाशित करण्यात येत आहे. मार्च महिन्यात ४ न्युज बुलेटीन प्रकाशित करण्यात आले.

न्युज बुलेटीन १ : क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान येथे वाणीभूषण श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. यांचा ६० वा दीक्षादिन व सौ. आशाबाई रमणलालजी लुंकड उज्ज्वल गोशाला नामकरण समारोह.

न्युज बुलेटीन २ : मुंबई येथील बलदोटा ग्रुप तर्फे पुण्यात ''समपर्ण'' नशा मुक्ती केंद्र उद्‌घाटन समारोह.

न्युज बुलेटीन ३ : गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री दौलतसागरसुरीश्वरजी म.सा. यांना ''संघ स्थविर'' पद अर्पण.

न्युज बुलेटीन ४ : आचार्य चंदनाजी यांना भारत सरकार द्वारा पद्‌मश्री पुरस्कार. पुणे सकल जैन समाज तर्फे गौरव समारंभ

या चारही न्युज बुलेटीन ऑनलाईन व्हॉटस्‌ॲप वर व्यक्तीगत व विविध ग्रुपवर पाठविण्यात आले. याचे समाज बांधवाकडून स्वागत करण्यात आले आहे.

विविध धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमाचे जैन जागृति ''न्युज बुलेटीन'' ऑनलाईन प्रकाशन करण्यासाठी संपर्क साधावा. मो. : ९८२२०८६९९७.

कव्हर तपशील - एप्रिल २०२२

❖ **आचार्यश्री चन्दनाजी – पद्मश्री पुरस्कार**
आचार्य चन्दनाजी यांना भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपती श्री रामनाथजी कोंविद यांच्या हस्ते पद्मश्री पुरस्कार देण्यात आला. यानिमित्त श्री जैन सकल संघ पुणे द्वारा २५ मार्च २०२२ रोजी महावीर प्रतिष्ठान येथे गौरव समारंभ आयोजित करण्यात आले.
(लेख पान नं. ४३) (बातमी पान नं. १६५)

❖ **गच्छाधिपती श्री दौलतसागरसूरिश्वरजी म.सा. ''संघ स्थविर'' पद**
१०१ वर्षीय गच्छाधिपती श्री दौलतसागरसूरिश्वरजी म.सा यांना समस्त जैन संघाद्वारे ''संघ स्थविर'' पद ८ मार्च २०२२ रोजी भव्य कार्यक्रमात अर्पण करण्यात आले. (बातमी पान नं. ३०)

❖ **श्री. प्रकाशजी धारीवाल – समाज भूषण पुरस्कार**
जय आनंद ग्रुप तर्फे श्री. प्रकाशजी धारिवाल यांना समाजभूषण पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. यावेळी साधना सदनचे अध्यक्ष ज्येष्ठ उद्योजक विजयकांतजी कोठारी, महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्रीज अँड ऍग्रीकल्चरचे अध्यक्ष ललितजी गांधी, जीतो अपेक्सचे उपाध्यक्ष विजयजी भंडारी, सुनीलजी बाफना, जय आनंद ग्रुपचे अध्यक्ष विजयजी चोरडिया आदी उपस्थित होते. (बातमी पान नं. २९)

❖ **'समर्पण' नशा मुक्ती केंद्र, पुणे**
बलदोटा ग्रुप मुंबई तर्फे पुण्यात 'समर्पण' नशा मुक्ती केंद्र सुरु करण्यात आले आहे. याचे उद्घाटन ६ मार्च २०२२ रोजी बॉलिवूडचे निर्देशक श्री. महेशजी भट्ट व ऍक्ट्रेस पूजा भट्ट यांच्या हस्ते व बलदोटा ग्रुपचे अध्यक्ष श्री. नरेंद्रजी बलदोटा, मनोचिकत्सक डॉ. अजहरजी हकीम, श्री. श्रेणीकजी बलदोटा, श्री. संजयजी रुणवाल इ. मान्यवरांच्या उपस्थित संपन्न झाले. (बातमी पान नं. १२३)

❖ **सौ. आशाबाई रमणलालजी लुंकड उज्ज्वल गोशाला नामकरण**
श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, लोणीकंद, पुणे येथील गोशालेला सौ. आशाबाई रमणलालजी लुंकड उज्ज्वल गोशाला असे नामकरण ६ मार्च २०२२ रोजी भव्य कार्यक्रमात करण्यात आले. नामफलकाचे उद्घाटन करताना श्री. रमणलालजी लुंकड, सौ. आशाबाई लुंकड, क्षेत्रपालचे ट्रस्टी श्री. सतिशजी सुराणा, श्री. संजयजी चोरडिया व लुंकड परिवार. (बातमी पान नं. २६)

❖ **आचार्य श्री आनंदऋषिजी जैन भवन, पुणे**
पुणे : शत्रुंजय मंदीर समोरील गगन सिग्नेट सोसायटीच्या शेजारी पालिकेच्या वतीने सुमारे २.५ कोटी रुपये खर्च करून बहुउद्देशीय हॉल बांधण्यात आला असून या हॉलला ''राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट प.पु.श्री. आनंदऋषिजी म.सा. बहु उद्देशीय जैन भवन'' हे नाव देण्यात आले. याचा लोकार्पण सोहळा भाजपचे प्रदेशाध्यक्ष चंद्रकांत पाटील व ओबीसी मोर्चा भाजपचे प्रदेशाध्यक्ष योगेश टिळेकर यांच्या हस्ते करण्यात आले. (बातमी पान नं. १५६)

❖ **स्व. माणिकचंदजी दुगड हॉस्पिटल – पुणे**
पुणे म.न.पा. तर्फे राजीव गांधी नगर येथे स्व. माणिकचंदजी नारायणदासजी दुगड

मल्टीस्पेशालिस्ट हॉस्पिटलची उभारणी करण्यात आली. याचे उद्घाटन उपमुख्यमंत्री श्री. अजितदादा पवार, नगरसेवक दत्तात्रय धनकवडे, श्री. प्रकाशजी धारिवाल, श्री. प्रमोदजी दुगड, श्री. रविंद्रजी दुगड इ. मान्यवरांच्या उपस्थित करण्यात आले.
(बातमी पान नं. १५७)

❖ **''डायग्नोपिन'' अंधेरी मुंबई ब्रँच – उद्घाटन**

पुणे येथील श्री. प्रफुल्लजी कोठारी व श्री. मितेशजी कोठारी यांच्या डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक सेंटरचे अंधेरी, मुंबई ब्रँचचे उद्घाटन खासदार श्री. गजाननजी कीर्तिकर व अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. १२९)

❖ **जैन समाज गौरव – श्री. प्रवीणजी चोरबेले**

जैन समाज गौरव व सेवाव्रती नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले यांची मुलाखात पान नं. ५१ वर प्रकाशित करण्यात आली आहे.

❖ **आनंदऋषिजी हॉस्पिटल – अहमदनगर**

राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांच्या ३० व्या स्मृतिदिना निमित्त आनंदऋषिजी हॉस्पिटलमध्ये स्व. मदनलालजी छाजेड यांच्या स्मरणार्थ शांताबाई मदनलालजी छाजेड, मनोजजी छाजेड, मुकेशजी छाजेड, अशोकलालजी छाजेड व स्कायब्रिज परिवाराच्या सहकार्याने आयोजित मोफत हृदयरोग तपासणी व शस्त्रक्रिया शिबीराचे उद्घाटन महापौर शेंडगे यांनी केले.
(बातमी पान नं. १५५)

❖ **जीतो कनेक्ट २०२२, पुणे**

जीतो पुणे तर्फे पुण्यात जीतो कनेक्ट २०२२ या आंतरराष्ट्रीय परिषदेचे आयोजन ६, ७, ८ मे २०२२ या काळात करण्यात येणार आहे.
(बातमी पान नं. २७)

Jaywant Group

(Pune and Mumbai)

Job - 2 Vacancies

- **Looking for Marketing Executive for Real Estate**
- **2 4 years or relevant Experience into real estate**
- **Must be fluent in English, Hindi and Gujrati**
- **Quick learner**
- **2 vacancies**

Send your resume on
hrit@jaywantgroup.com
call : 9970126157

बनजाए यादगार आपकी खुशियों के पल
जब आपके साथ हों स्मिता कुशल

बधाई इव्हेन्टस्

(नए थीम के साथ) स्मिता, कुशल

www.badhaievents.com

इव्हेन्ट मॅनेजमेंट, कॉरपोरेट शोर, थीम शो, गेट टुगेटर, संगीत संध्या, एन्ट्री ऑर्केस्ट्रा, अनांऊसेमेंट, फॅमिलीथीम,

कोरियोग्राफर, बॉलीवूड और राजस्थानी डान्स, माहेरा, फेरे (वैदिक फेरे), मेहंदी, डी.जे., साऊंड, म्युजिकल तंबोला, गेम्स, सेलिब्रिटी, करावके शोर, दांडिया, सगाई, स्वर्णसिढी, नामकरण जन्मदिवस, ढूंढ, वास्तुपूजा, साद (गोदभराई), अमृत महोत्सव, माता की चौकी एवम्, जैन भक्ति गीतों का शानदार कार्यक्रम

Watch My Vidoes On YouTube
Search Kushal Smita

स्मिता (मुंबई) : 9960093910
कुशल (पुणे) : 9850097558

Email : dreammelodies@gmail.com
Add.: C - 4, Yashashree Society, Gokulnagar,
Near Shartrunjay Jain Mandir, Katraj, Pune - 411046.

श्री महावीर स्वामिजी का जीवन परिचय

* शुभ नाम : १) वर्धमान, २) महावीर, ३) वीर, ४) सन्मति, ५) काश्यप, ६) ज्ञातपुत्र, ७) विदेह, ८) श्रमण-आर्य, ९) वैशालिक
* प्रथम माता : देवानंदा ब्राम्हणी
* प्रथम पिता : ऋषभदत्त ब्राम्हण
* द्वितीय माता : त्रिशला क्षत्रियाणी
* द्वितीय पिता : सिध्दार्थ राजा
* भाई : नंदिवर्धन महाराजा
* भाभी : ज्येष्ठा महाराणी
* बहन : सुदर्शना
* धर्मपत्नी : यशोदा राणी
* सुपुत्री : प्रियदर्शना
* (जमाई) दामाद : जमाली राजा
* मामा : चेडाराजा * मामी : पृथ्वीराणी
* नाना : केकराजा * नानी : यशोमती
* काका : सुपार्श्व * फुफा : जितशत्रु
* सासु : धारिणी राणी * ससरा : समरवीर राजा
* पौत्री : शेषवती (यशस्वती)
* यक्ष : मातंगदेव * यक्षिणी : सिध्दायिका देवी
* आयुष्य : ७२ वर्ष * लंछन : सिंह
* शरीर वर्ण : सुवर्ण * गणधर : ११
* मुख्य शिष्य : गौतमस्वामी
* पट्टधर शिष्य : सुधर्मा स्वामी
* श्रेष्ठ शिष्य : धन्ना अणगार
* पूर्वभव कितने : मुख्य २७
* साधु संख्या : १४ हजार शिष्य
* साध्वी संख्या : ३६ हजार
* श्रावक संख्या : ३ लाख १८ हजार
* श्राविका संख्या : १ लाख ५९ हजार
* केवलज्ञानी साधु : ७००
* केवलज्ञानी साध्वीजी : १४००
* अवधिज्ञानी मुनि : १३००
* मन:पर्यवज्ञानी मुनि : ५००
* चौदहपूर्वी मुनि : ३००
* वादी मुनि : ४००
* अनुत्तर विमान में उत्पन्न होनेवाले मुनि : ८००
* कुल चातुर्मास : ४२

प्रभु वीर के पांच कल्याणक स्थल

		स्थल
* च्यवन कल्याणक	आषाढ शुक्ल ६	ब्राम्हणकुंड नगर
* जन्म कल्याणक	चैत्र शुक्ल १३	क्षत्रियकुंड नगर
* दीक्षा कल्याणक	मृगशिर कृष्ण १०	क्षत्रियकुंड नगर
* केवलज्ञान कल्याणक	वैशाख शुक्ल १०	ऋजुवालिका नदी के तटपर
* निर्वाण कल्याणक	कार्तिक कृष्ण अमास	पावापुरी
* च्यवन किस देवलोक से देवलोक		प्राणत (१०वा)
* दीक्षा दिन के शिबीका का नाम		चंद्रप्रभा
* तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन		नंदनऋषि के भव में
* नंदनऋषि के भव में ११ लाख, कितने मासक्षमण किए ?		८० हजार, मासक्षमण

प्रभु महावीर के कुल भव २७ है – जिसमें

* मनुष्य के १४ * देव के १०
* नरक के २ * तिर्यंच का १ भव है
* प्रभु महावीर का टोटल आयुष्य है - ७२ वर्ष जिसमें - संसार में ३० वर्षं + छद्मस्थ अवस्था में - साडे बारा वर्ष (१२।। वर्ष) + केवली अवस्था में - २९ वर्ष, २ महिने, २८ दिन = ७२ वर्ष संपूर्ण

विशेष : महावीर प्रभुने साडे बारा वर्ष में कुल मिला के ४१६६ उपवास किए। ●